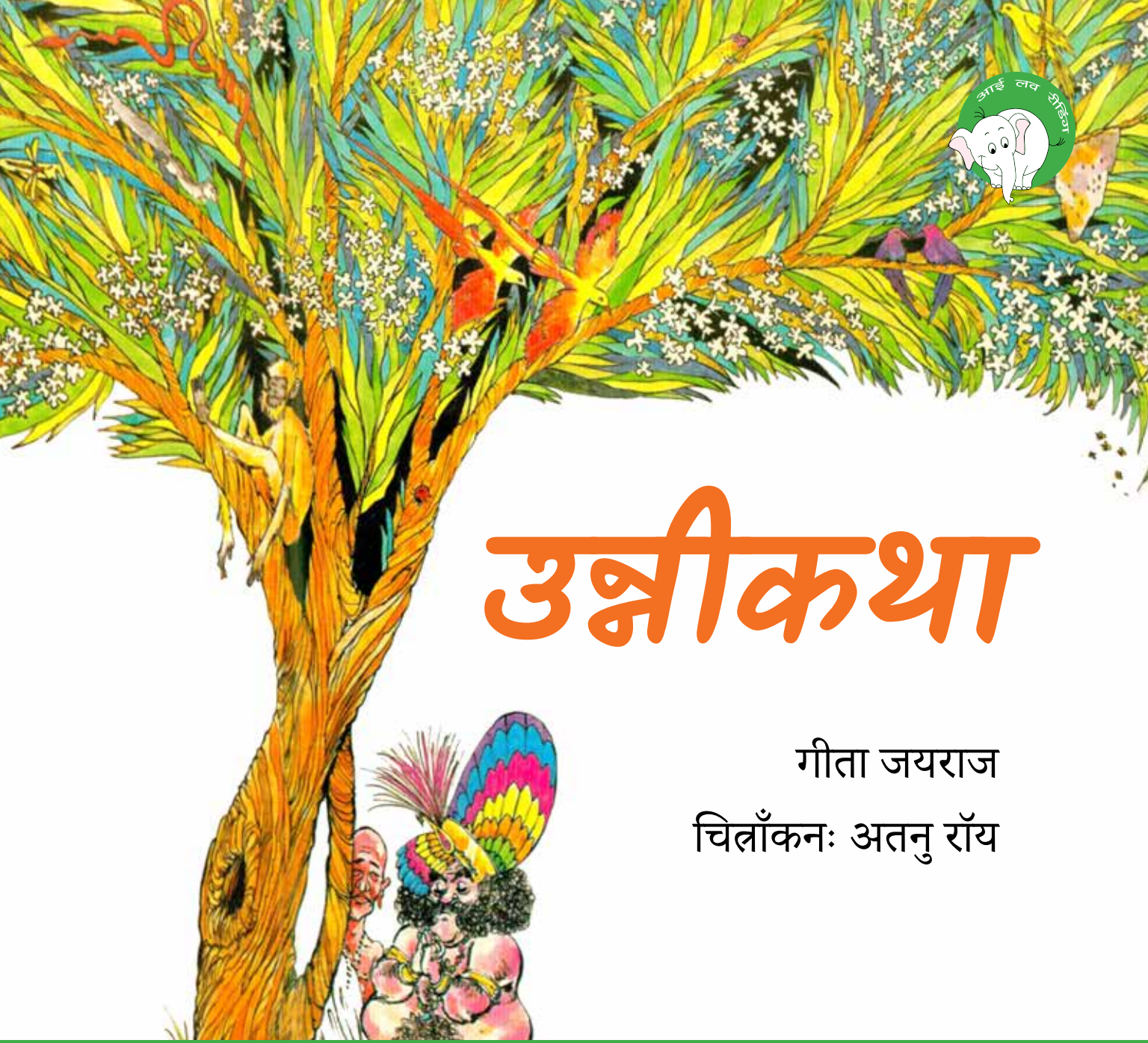

# उन्नीकथा

गीता जयराज

चित्राँकनः अतनु रॉय

कथा की ३००एम थिंकबुक

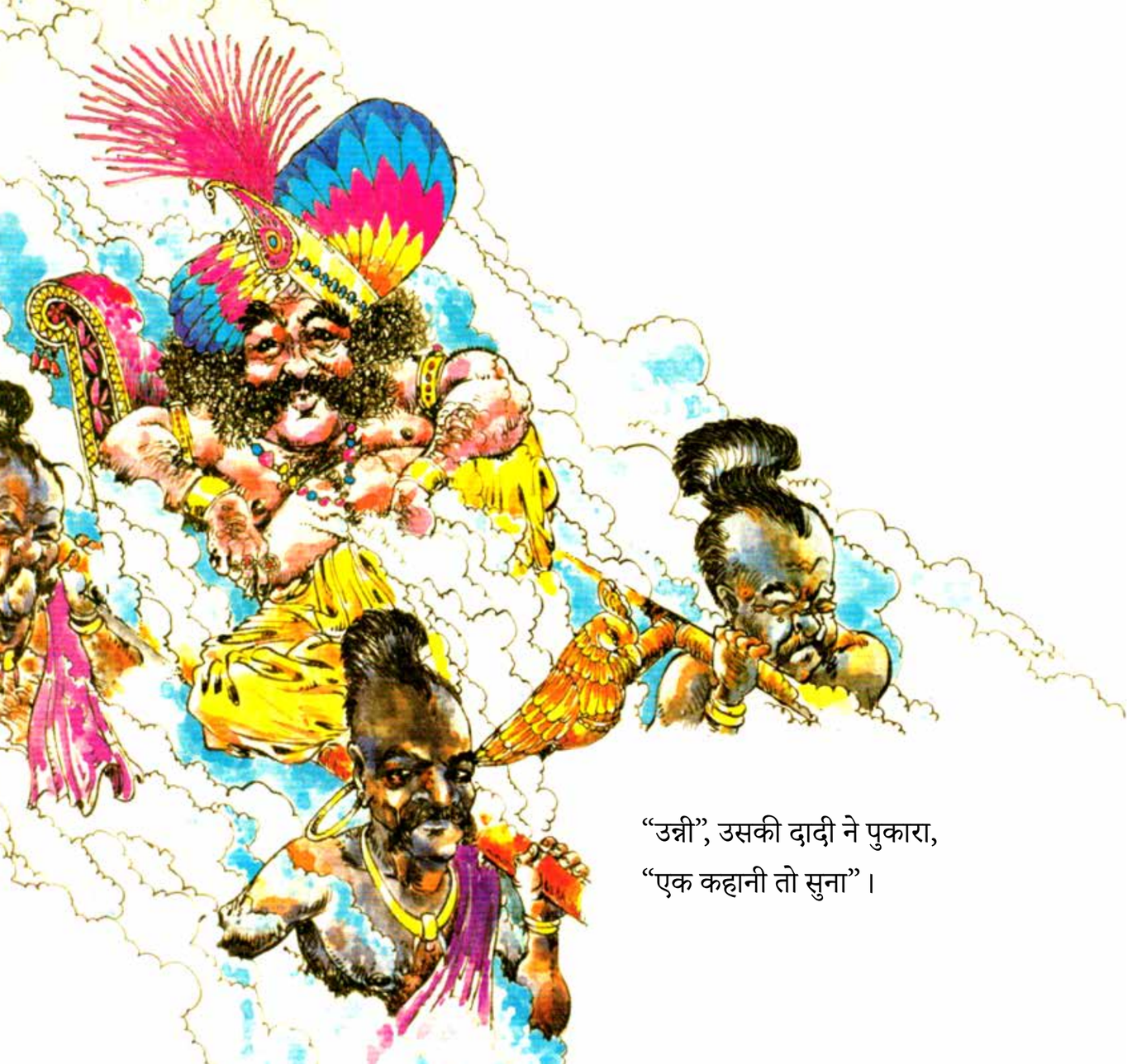

“उन्नी”, उसकी दादी ने पुकारा,
“एक कहानी तो सुना”।

उन्नी ने झटपट अपनी किताबें समेटी और सटकर दादी के पास आ बैठा। “मुत्तषी”, उसने धीमे से कहा, “सुनो, एक काँच के पेड़ की छोटी सी कहानी, लो देखो!”

इतना कहकर जैसे ही उन्नी ने सामने की दीवार की ओर इशारा किया, मुत्तषी ने वहाँ एक अनोखा दृश्य देखा! उसने देखा कि एक राजा जैसा आदमी पालकी में बैठा हुआ जा रहा है।

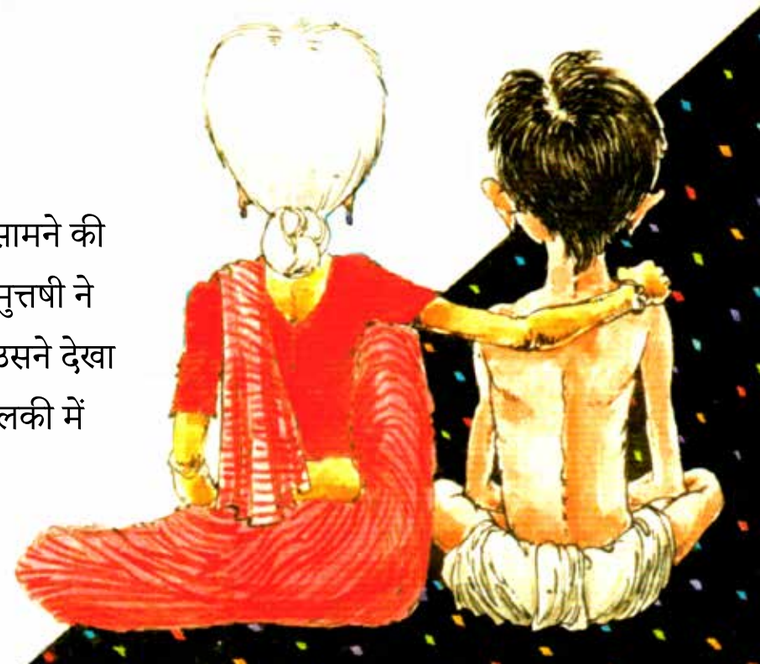

उन्नी ने कहानी शुरू की।

बहुत साल पहले, एक गाँव में कुरुमन पणिक्कन नाम का एक मुखिया रहता था। एक दिन वह चंपक के पुराने, पेड़ के नीचे रखी, पत्थर की मूर्ति की पूजा कर रहा था, तभी वहाँ एक अजनबी, उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

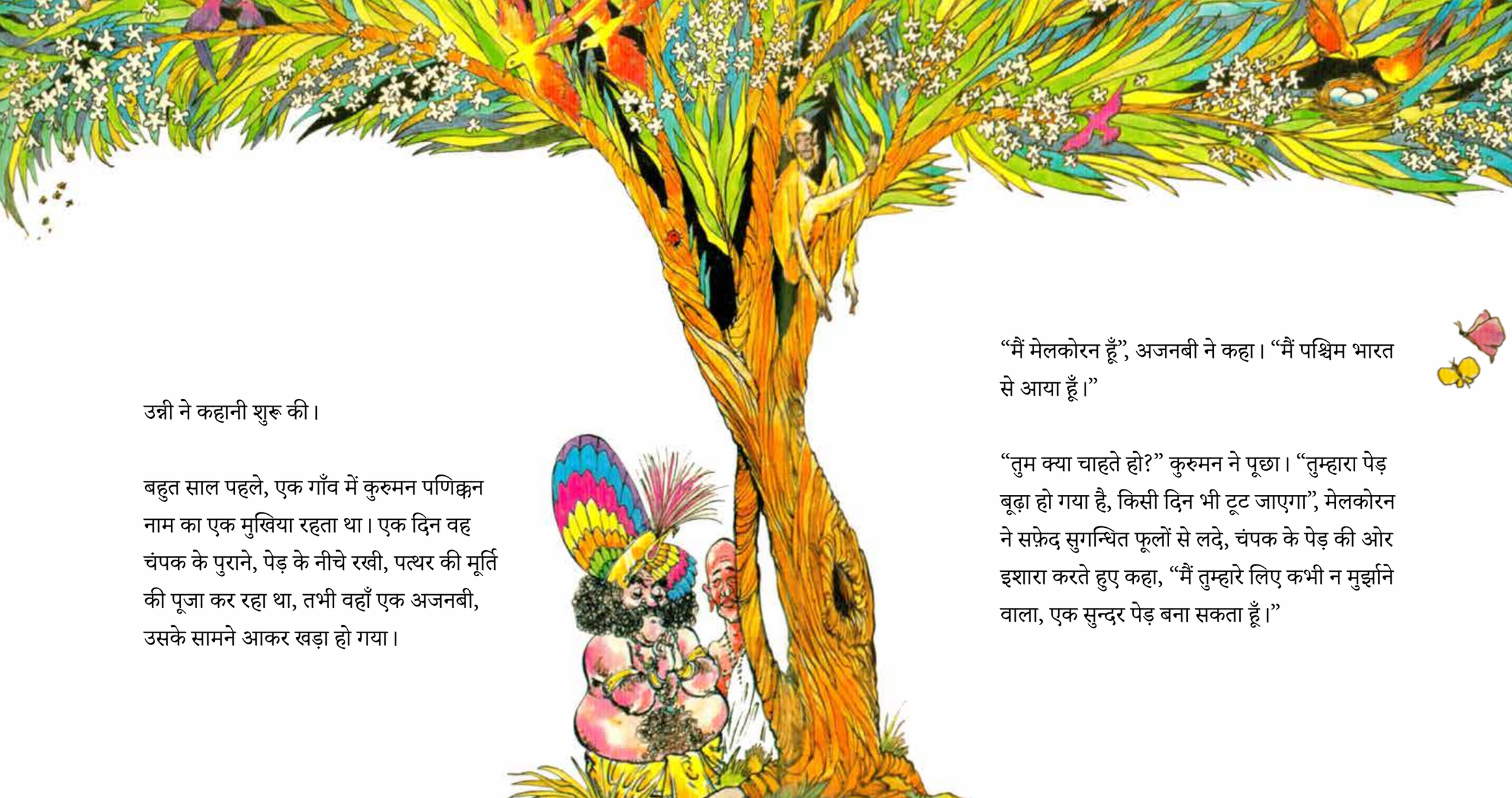

“मैं मेलकोरन हूँ”, अजनबी ने कहा। “मैं पश्चिम भारत से आया हूँ।”

“तुम क्या चाहते हो?” कुरुमन ने पूछा। “तुम्हारा पेड़ बूढ़ा हो गया है, किसी दिन भी टूट जाएगा”, मेलकोरन ने सफ़ेद सुगन्धित फूलों से लदे, चंपक के पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, “मैं तुम्हारे लिए कभी न मुर्झाने वाला, एक सुन्दर पेड़ बना सकता हूँ।”

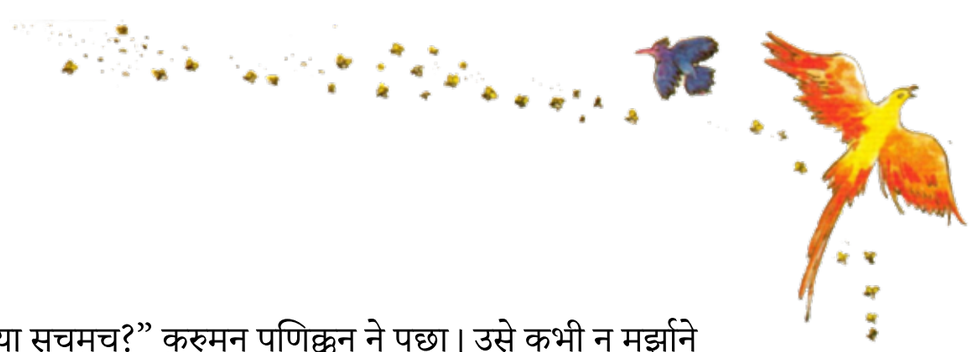

“क्या सचमुच?” कुरुमन पणिक्कन ने पूछा। उसे कभी न मुर्झाने वाले पेड़ का सुझाव, बहुत ही अच्छा लगा। “ठीक है”, उसने हाथ हिलाकर कहा, “तुम मुझे कभी न मुर्झाने वाला एक पेड़ बना कर दो।”

मेलकोरन अपनी कुल्हाड़ी ले आया। कुछ ही देर में, बरसों से खड़ा वह पुराना चंपक का पेड़, कट कर नीचे आ गिरा।

नन्हें-नन्हें पक्षी, उनके बच्चे व अण्डों समेत, कई घोंसले भी पेड़ के साथ गिर पड़े। पक्षी चीं - चीं करते हुए हवा में उड़ गए। फिर मेलकोरन ने अपने पेड़ का काम शुरू कर दिया।

वह काँच के ढेर सारे रंगीन टुकड़े ले आया। धीरे-धीरे व बड़े ध्यान से उसने, पेड़ की जड़ें व तना बनाया, फिर उसकी शाखाएँ बनाई।

हरे और सफ़ेद कांच के टुकड़ों से, उसने प्यारे-प्यारे फूल और पत्ते बनाए। उसने हर डाली और हर पत्ते को बहुत प्यार से तराशा।

इस तरह डेढ़ बरस बीत गए। पेड़ धूप में चमचमाने लगा। सूर्य के उदय और अस्त होने के रंग, काँच की पत्तियों से छन कर, बिखर उठे। आस-पास और दूर-दूर से लोग, इस अनोखे पेड़ को देखने आने लगे। पणिक्कन तो बहुत ही खुश था।

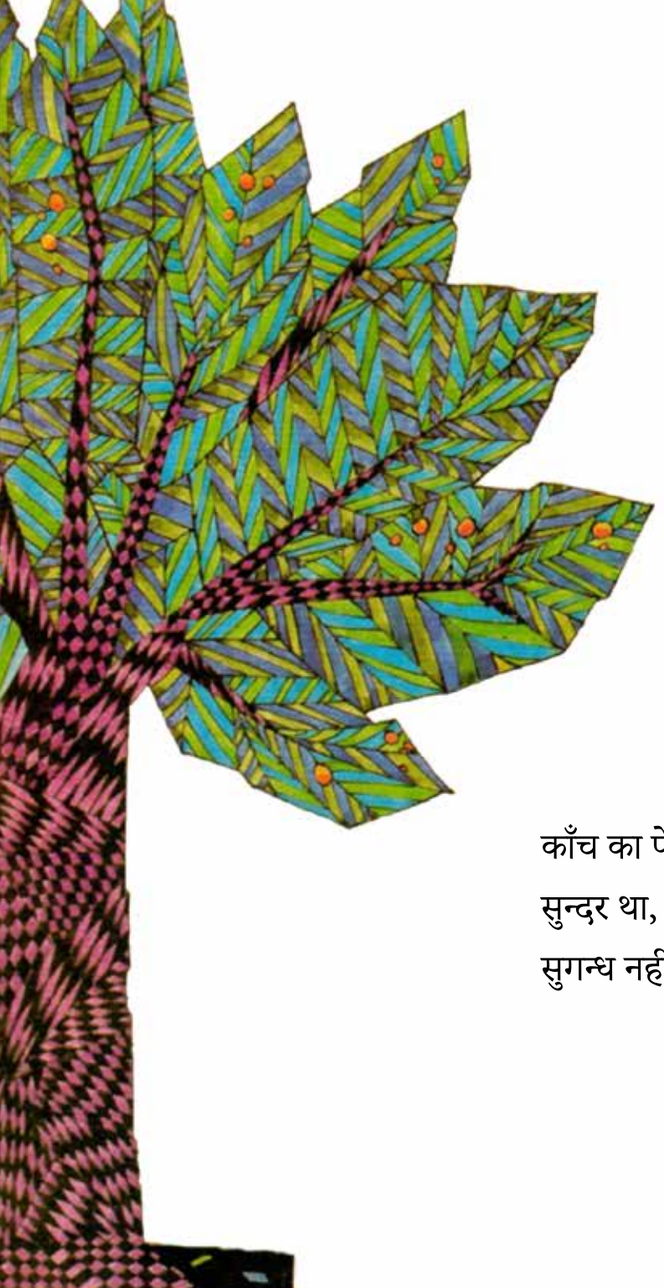

काँच का पेड़, देखने में तो बहुत ही सुन्दर था, लेकिन उसके फूलों में सुगन्ध नहीं थी।

शाखाओं पर, काँच के चमकीले घोंसले तो थे पर कोई भी पक्षी वहाँ, बसेरा नहीं करता था। न ही बच्चे उस पर चढ़ सकते थे ...

“क्या काँच का पेड़ सचमुच के पेड़ जैसा बन सकता है ?” उन्नी सोचते हुए चुप हो गया। दीवार के दृश्य, धुंधले पड़ गए थे। उन्नी ने अपनी दादी की ओर देखा लेकिन वह गहरी नींद सो चुकी थी।

vru jk; ने एक सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रकारी की है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। उत्कृष्ट रंगों से सजी उनकी विस्तृत छवियाँ नन्हे पाठकों के मन को छू लेती हैं। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि *इंडिया टुडे* में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनक फ़ॉर इलस्ट्रेशन। रॉय का स्टूडियो गुड़गाँव में है।

## क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

**– चार्ल्स लैंड्री, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***


पहला हिंदी संस्करण 2021


कृति स्वामित्व © कथा, 1995, 2021
मौलिख लेखन कृति स्वामित्व © गीता जयराज, 2021
मौलिख चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।


नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित


**हमारा लक्ष्यः** हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।


ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org


इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो







































**FOR OUR BOOKS**

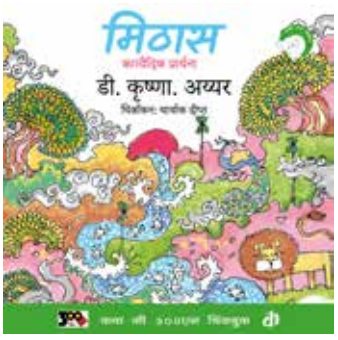

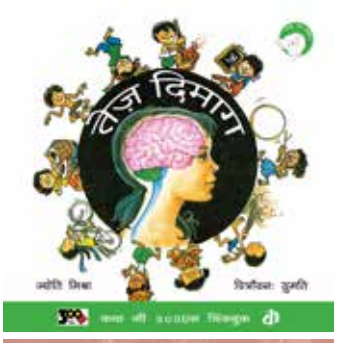

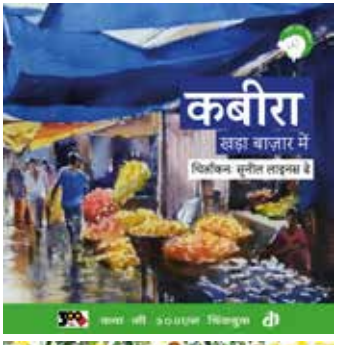

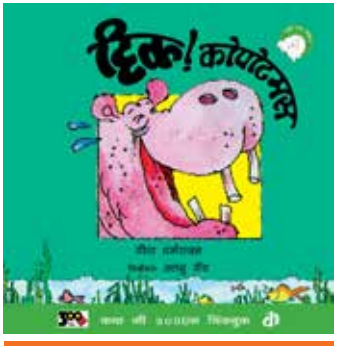

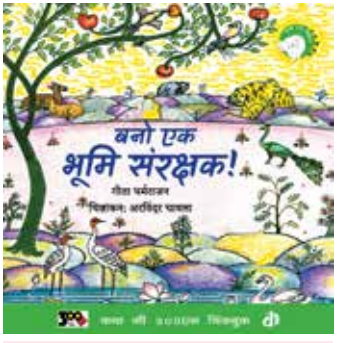

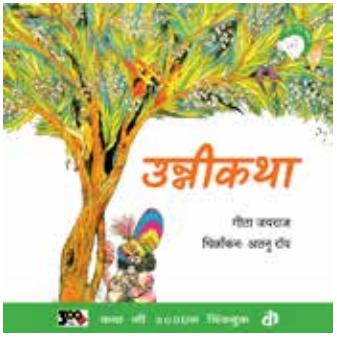

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx

इसकी तीन शृंखला में